हमारे जीवन के प्रधान, प्रभु यीशु मसीह के नाम की स्तुति हो!

आओ हम मिलकर बाइबल से सीखें, हमारे परमेश्वर का वचन जो हमारे पथ के लिए दीपक और हमारे मार्ग के लिए ज्योति है, जैसा कि लिखा है:

“तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।”
(भजन संहिता 119:105)

बाइबल हमें सिखाती है कि हमें प्रभु और उसकी शक्ति को खोजना चाहिए।

“यहोवा और उसकी शक्ति के खोजी

रहो, उसके दर्शन के निरन्तर खोजी रहो।”
(भजन संहिता 105:4)

हममें से बहुत लोग केवल प्रभु की सामर्थ्य या शक्ति की ही तलाश करते हैं… लेकिन बाइबल हमें सिखाती है कि हमें प्रभु को और उसकी शक्ति दोनों को खोजना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि ये दोनों बातें साथ-साथ चलती हैं।

हो सकता है कि किसी के पास परमेश्वर की शक्ति हो, लेकिन उसके जीवन में स्वयं परमेश्वर न हो!
तब आप पूछ सकते हो, ऐसा कैसे हो सकता है?

प्रभु यीशु ने कहा था कि उस दिन बहुत लोग आएंगे और कहेंगे, “हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?” लेकिन वह उनसे कहेगा, “मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना।”

“उस दिन बहुत जन मुझसे कहेंगे, ‘हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की? और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला? और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?’
तब मैं उन से खुलकर कह दूँगा, ‘मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना;
हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।’”
(मत्ती 7:22-23)

ध्यान दो, जब प्रभु कहता है “मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना”, इसका

अर्थ है कि उनके पूरे जीवन में उनके और प्रभु के बीच कोई सच्चा संबंध कभी नहीं था।
यद्यपि वे परमेश्वर की शक्ति में कार्य कर रहे थे, दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे, और अनेक चमत्कार कर रहे थे, लेकिन उनके जीवन में स्वयं परमेश्वर नहीं था।

इसलिए बाइबल हमें सिखाती है कि हमें “प्रभु और उसकी शक्ति” दोनों को खोजना चाहिए।
सबसे पहले हमें प्रभु स्वयं को खोजना चाहिए, और उसके बाद उसकी शक्ति हमारे जीवन में प्रकट होगी।

अब प्रश्न यह है कि हम प्रभु को कैसे खोजें और कैसे पाएं?
हम प्रभु को उसकी इच्छा को पूरा करके पाते हैं।

तो परमेश्वर की इच्छा क्या है?

“क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यही है कि तुम पवित्र बनो; अर्थात व्यभिचार से बचे रहो।
तुम में से हर एक अपने-अपने शरीर को पवित्रता और आदर के साथ रखना जाने।
और न जाने जैसा कि वे अन्यजाति जो परमेश्वर को नहीं जानते, अभिलाषा में न रहें।”

(1 थिस्सलुनीकियों 4:3-5)

हम पवित्र बनाए जाते हैं जब हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं।
यह सच्चा विश्वास हमें पश्चाताप और जल में पूर्ण डुबकी देकर प्रभु यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने के लिए लाता है, जिससे हमारे पापों की क्षमा हो। जैसा कि लिखा है:

“मन फिराओ, और तुम में से हर एक यीशु मसीह के नाम से पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लो; तब तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।”
(प्रेरितों के काम 2:38)

जब तुम ऐसा करोगे, तब वास्तव में तुमने प्रभु को खोजा है, और वह तुम्हारे जीवन में आएगा। वह अपनी अनुग्रह और अपनी सामर्थ्य को प्रकट करेगा।

परंतु सावधान रहो! केवल उसकी शक्ति को ढूँढ़ने में मत लगो, जबकि स्वयं प्रभु तुम्हारे जीवन में न हो।

□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□, □□ □□□□□□□□□□□ □□
□□□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□□□:

□ □□□□□□□□□□ / □□□ □□□□: +255789001312 □□ +255693036618
✍ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp